International Journal of Applied Research 2020; 6(6): 217-219

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(6): 217-219
www.allresearchjournal.com
Received: 16-04-2020
Accepted: 17-05-2020

डॉ० प्रिया कुमारी
एम० ए०, (समाजशास्त्र), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० प्रिया कुमारी
एम० ए०, (समाजशास्त्र), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

शिक्षा एवं खान–पान, रहन–सहन तथा व्यवहार में परिवर्तन

डॉ० प्रिया कुमारी

सार
आधुनिक शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता भी बढ़ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी छात्राओं में आधुनिक शिक्षा के प्रति उत्साहवर्द्धक स्थिति के संकेत मिल रहे हैं। आधुनिक शिक्षा के कारण वर्तमान समय में महिलाओं के विचार, जीवन शैली, खान–पान एवं रहन के स्तर में काफी परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है। ये बिना किसी हिचकिचाहट के अपने अधिकारों का प्रयोग कर रही है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था को दरकिनार कर आज वे पुरूष के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर काम कर रही है। इतना ही नहीं वे आर्थिक रूप में मजबूत होकर अपने तथा परिवार के आर्थिक व्यवस्था में योगदान दे रही है।

कूट शब्दः शिक्षा, महिलाओं की सहभागिता, आधुनिक शिक्षा

प्रस्तावना
शिक्षा का स्पष्ट संबंध जागरूकता के साथ है। जागरूकता के कारण शिक्षित व्यक्तियों में वैज्ञानिक तथा वैश्विक दृष्टि से प्रति एक नइ चेतना पैदा होती है। उनमें स्वतंत्राता, समानता तथा मानवतावाद के प्रति नई दृष्टि उत्पन्न होती है। उन्हें दुनिया के चिंतनों से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता है। आधुनिक शिक्षा व्यक्ति को जादू–टोना, छुआछुत, जड़ता और अंधविश्वास के अंधकार से निकालकर दुनिया के महान चिंतनों के वैचारिक क्षितित की ओर ले जाती है।
आधुनिक शिक्षा ने भारतीय सामाजिक संरचना के अनेक आधारभूत तत्वों को झकझोर दिया है। बंद दरवाजे और वातायन को खोलकर एक नए क्षितिज का सृजन किया है। आधुनिक शिक्षा के कारण राजनीतिक चेतना का भी विकास हो रहा है। राजनीतिक शक्ति संरचना के क्षेत्र में नए–नए समूहों का प्रवेश हो रहा है तथा राजनीतिक परिदृश्यों में कृषक जातियों एवं दलित वर्गो की भूमिका निर्णायक सिद्ध हो रही है।

गाँधीजी एवं शिक्षा के उद्देश्य
गाँधीजी ने शिक्षा के उद्देश्य का विभाजन दो रूपों में किया हैः–
1. वैयक्तिक उद्देश्य तथा
2. सामाजिक उद्देश्य

वैयक्तिक उद्देश्य के अंतर्गत
- **दृढ इच्छा शक्ति का विकास** – महात्मा गाँधी बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देते थे। उनके अनुसार, शिक्षा द्वारा बालक का विकास इस प्रकार किया जाए कि वह 'स्व' को पहचान सके। दृढ़ इच्छा–शक्ति/आत्मबल के विकास से ही 'स्व' को पहचाना जा सकता है तथा सत्य का साक्षात्कार हो सकता है।
- **चारित्रिक विकास**– गाँधीजी की धर्म में पूर्ण आस्था थी। अतः वे शिक्षा को चारित्रिक विकास से आत्मबल के विकास में सहायता मिलती है और आत्मबल दृढ़ इच्छा शक्ति के निर्माण में सहायक होता है। गाँधी मन, वचन और कर्म की पवित्रता को चारित्रिक विकास में स्थान देते थे।
- **व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास**– गाँधीजी के अनुसार बालक की शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्तियां का विकास शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इस प्रकार गाँधीजी व्यक्तित्व का सर्वांगीन विकास चाहते थे। उनके मतानुसार शिक्षा द्वारा हाथ, मस्तिष्क एवं हृदय का संतुलित विकास होना चाहिए। गाँधीजी पुस्तकीय शिक्षा के विरोधी थे, वे व्यावहारिक शिक्षा के पक्षधर थे।

- **स्वावलम्बन**– गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य स्वावलम्बन या आत्मनिर्भरता है। उनके अनुसार वह शिक्षा व्यर्थ है, जो व्यक्ति को जीविकोपार्जन स्वावलम्बन की ओर प्रेरित न करे। अतः शिक्षा के द्वारा प्रत्येक बालक–बालिका पूर्णरूपेण स्वावलम्बी बनाना चाहिए स्वावलम्बन का अर्थ आत्मनिर्भरता अथवा जीविकोपार्जन की योग्यता है। उन्होंने लिखा है '' शिक्षा बेरोजगारी के प्रति एक प्रकार का बीमा होनी चाहिए।'' फलतः गाँधीजी ने बुनियादी शिक्षा योजना एवं उद्योग– शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया है। उन्होंने लिखा है– 14 वर्ष की आयु में बच्चा अपनी शिक्षा पूरी करे तो हमें उसे एक उत्पादक के रूप में समाज को सौंपना चाहिए। अतः गाँधीजी बालक को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे ताकि रोजी–रोटी की तला''ा में इधर–उधर न भटकना पड़े।

समाजिक उद्देश्यों के अन्तर्गत

- पोशणहीन समाज की स्थापना – गाँधीजी शिक्षा द्वारा ऐसे समाज की पुनर्रचना चाहते थे जो स्वावलम्बी हो, जिसमें शोशण की भावना न हो। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सत्य और अहिंसा को आधार बना कर वे समाज में 'श्मूक सामाजिक क्रान्ति'' लाना चाहते थे, जिससे कि समाज में शोशण न हो। वे शोशण को समाज का सबसे बड़ा दुर्गुण मानते थे। गाँधीजी के अनुसार – पाप करने वाला पापी नहीं, बल्कि उसे सहने वाला पापी है।
- समाज–सेवा – गाँधीजी समाज सेवा एवं मानव सेवा में बड़ी आस्था रखते थे। ''मानव– सेवा ईष्वर की सेवा है''– ऐसा उनका विश्वाश था। उन्होंने लिखा है– ईष्वर को प्राप्त करने के लिए सबसे बड़ा साधन मानव सेवा है। जब तक मानव में समाज एवं मानव–सेवा की भावना जागृत नहीं होगी, समाज में सेवा एवं त्याग की भावना जागृत न हो सकेगी। अतः गाँधीजी दीन–दुखियों उपेक्षितों की सेवा के पक्षधर थे। शिक्षा ही समाज एवं मानव सेवा की भावना का विकास कर सकती है, ऐसा गाँधीजी का विचार था।
- शिक्षा का सिद्धान्त – महात्मा गाँधी ने सन् 1937 में 'बेसिक शिक्षा ' के नाम से एक शिक्षा योजना प्रस्तुत की जो 'करके सीखो' के सिद्धान्त पर आधारित थी। इस शिक्षा योजना मे–
- 7 से 14 व'ा की आयु के बालकों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा,
- मातृभाषा शिक्षा का माध्यम हो,
- शिक्षा हस्तकला पर आधारित हो,
- वास्तविक जीवन से सम्बन्धित शिक्षा तथा
- आदर्श नागरिक तैयार करना शामिल है।

शिक्षा के कारण खान–पान, रहन–सहन तथा व्यवहार में परिवर्तन

शिक्षा के कारण खान–पान, रहन–सहन तथा व्यवहार में परिवर्तन से संबंधित तथ्यों की जानकारी साक्षात्कार–अनुसूची के माध्यम से किया गया जिसका संक्षिप्त विश्लेषण यहीं किया जा रहा है।

तालिका 1: शिक्षित व्यक्ति और अनपढ़ व्यक्ति के भाषा शैली में अन्तर होने के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नही		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	20 वर्ष से 27 वर्ष	30	10.00	15	05.00	45(15)
2.	28 वर्ष से 35 वर्ष	45	15.00	18	06.00	63(21)
3.	36 वर्ष से 43 वर्ष	54	18.00	21	07.00	75(25)
4.	44 वर्ष से 51 वर्ष	51	17.00	15	05.00	27(09)
5.	52 वर्ष से 59 वर्ष	21	07.00	06	02.00	27(09)
6.	60 वर्ष से अधिक	15	05.00	09	03.00	24(08)
7.	कुल	216	72.00	84	28.00	300(100)

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 72 प्रतिशत उत्तरदाता अनुभव करते हैं कि शिक्षित व्यक्ति और अनपढ़ व्यक्ति के भाषा शैली में अन्तर होता है। शिक्षित व्यक्ति में शिक्षा के विकास के कारण उनकी भाषा शैली सुदृढ़ हो जाती है जबकि अनपढ़ व्यक्ति की भाषा शैली परम्परागत ही होती है। ज्ञातव्य है कि सभी उम्र के उत्तरदाताओं ने समान भाव से उपर्युक्त विचार को स्वीकार किया।

तालिका 2: शिक्षा द्वारा जीवन के स्तर को उत्तम बनाये जाने के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नही		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	20 वर्ष से 27 वर्ष	27	09ण्00	18	06.00	45(15)
2.	28 वर्ष से 35 वर्ष	39	13.00	24	08.00	63(21)
3.	36 वर्ष से 43 वर्ष	60	20.00	15	05.00	75(25)
4.	44 वर्ष से 51 वर्ष	57	19.00	09	03.00	66(22)
5.	52 वर्ष से 59 वर्ष	21	07.00	06	02.00	27(09)
6.	60 वर्ष से अधिक	18	06.00	06	02.00	24(08)
7.	कुल	222	74.00	78	26.00	300(100)

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (74 प्रतिशत) के अनुसार शिक्षा द्वारा जीवन के स्तर को उत्तम बनाया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही लोग अपने सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन स्तर में बदलाव लाता है तथा उसमें व्याप्त बुराईयों को त्याग देता है, जबकि 26 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रश्न को ही नकार दिया। सभी उम्र के लोग इस बात से सहमत है कि शिक्षा द्वारा जीवन के स्तर को उत्तम बनाया जाता है।

तालिका 3: शिक्षित व्यक्ति का रहन–सहन व खान–पान अशिक्षित व्यक्ति से भिन्न होने के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नही		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	20 वर्ष से 27 वर्ष	40	13.33	05	01.67	45(15)
2.	28 वर्ष से 35 वर्ष	57	19.00	06	02.00	63(21)
3.	36 वर्ष से 43 वर्ष	66	22.00	09	03.00	75(25)
4.	44 वर्ष से 51 वर्ष	60	20.00	06	02.00	66(22)
5.	52 वर्ष से 59 वर्ष	18	06.00	09	03.00	27(09)
6.	60 वर्ष से अधिक	18	06.00	06	02.00	24(08)
7.	कुल	259	86.33	41	13.67	300(100)

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता हे कि 86.33 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत है कि शिक्षित व्यक्ति का रहन–सहन व खान–पान अशिक्षित व्यक्ति से भिन्न होता है। शिक्षित व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को देखते हुए अपने खान–पान में व्याप्त कमियों को दूर करते हैं, जबकि अशिक्षित व्यक्ति परम्परागत स्तर पर प्रचलित खान–पान को ही अपनाये रहते हैं। उनमें वे कोई बदलाव नहीं कर पाते हैं, जबकि 13.67 प्रतिशत उत्तरदाता इससे असहमत थे। तुलनात्मक रूप से युवा वर्ग मानते है कि शिक्षित व्यक्ति का रहन–सहन व खान–पान अशिक्षित व्यक्ति से भिन्न होता है।

तालिका 4: शिक्षित व्यक्ति बेटे–बेटियों की शिक्षा–दीक्षा व पालन–पोषण में कोई भेद–भाव नहीं करते हैं मानने के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नही		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	20 वर्ष से 27 वर्ष	39	13.00	06	02.00	45(15)
2.	28 वर्ष से 35 वर्ष	54	18.00	09	03.00	63(21)
3.	36 वर्ष से 43 वर्ष	69	23.00	06	02.00	75(25)
4.	44 वर्ष से 51 वर्ष	54	18.00	12	04.00	66(22)
5.	52 वर्ष से 59 वर्ष	21	07.00	06	02.00	27(09)
6.	60 वर्ष से अधिक	18	06.00	06	02.00	24(08)
7.	कुल	255	85.00	45	15.00	300(100)

साक्षात्कार के दौरान सम्मिलित 85 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे इस बात से सहमत हैं कि शिक्षित व्यक्ति बेटे–बेटियों की शिक्षा–दीक्षा व पालन–पोषण में कोई भेद–भाव नहीं करते हैं। वे बेटे और बेटियों को एक ही दृष्टि से देखते हैं। बेटे को शिक्षा–दीक्षा दी जाती है। उतनी ही बेटियों को भी दी जाती है। कहीं–कहीं तो बेटे से भी अधिक शिक्षा बेटियों को दी जाती है, जबकि 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार आज भी बहुत से शिक्षित व्यक्ति बेटे–बेटियों की शिक्षा दीक्षा व पालन पोषण में कोई भेद–भाव करते है।

निष्कर्ष

सामाजिक परिवर्तन और शिक्षा का गहरा संबंध है। कोई समाज अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति शिक्षा द्वारा करता है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। यह समाज में होने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करती हुई आगे बढ़ती है और बदलते हुए समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में मनुष्य की सहायता करती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन शिक्षा के स्वरूप, उसके उद्देश्य और पाठ्यचर्या आदि सभी को बदलते हैं। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक परिवर्तन करती है और सामाजिक परिवर्तन शिक्षा को प्रभावित करते हैं और यह चक्र सदैव चलता रहता है।

संदर्भः

1. सिंह योगेन्द्र (1973): मॉडर्नाइजेशन ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन, थॉमसन प्रेस इण्डिया लिमिटेड, फरीदाबाद, पृ0 150
2. वही, पृ0 151
3. वही
4. वही, पृ0 152
5. श्रीनिवास, एम.एन. (1966): सोशल चेंज इन मार्डन इंडिया, लॉस ऐन्जलिस, कॉलिफॉर्निया, पृ0 23
6. ओटावे, ए.के.सी. (1990): फिलॉस्फी ऑफ एजूकेशन, पृ0 51
7. मजूमदार, रायचौधरी एवं दत्त (1999) इन एडभांस हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ0 960
8. सैयदेन, के.जी. (1985) एजूकेशन, कल्चर एण्ड द सोशल ऑर्डर, पृ0 26
9. वही, पृ0
10. ऑगबर्न, विलियम (1922): सोशल चेंज,
11. ओटावे, ए.के.सी. (1990): पूर्वोक्त, पृ0 56
12. वही
13. वही, 57